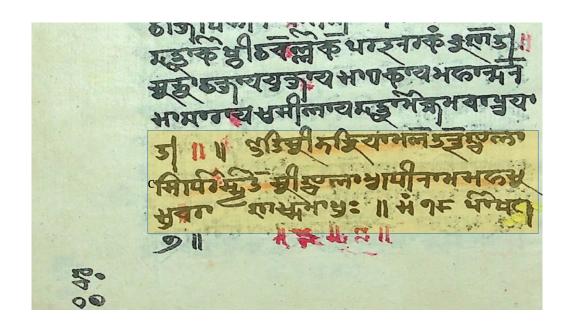
Manuscript 21

<u>Title – Jwala Mukhi Nama Sahasra (from Rudrayamala Tantra)</u>



多用的中央意义的 医对牙囊炎性的 计 P. Schliebert Battle F. Markett W. at a registration of the first 自己的一种的一种的基础。这个可能是一种的 Section of Free and Parket States 17年12月2日 李龙山中 李龙田中安徽省 THE REPORT OF THE PARTY OF THE PARTY. 主要战员市中华的"大汉"的特色篇 19年1月18日 1950年 [10] 11日本日中日本(1950年) 深地作**为**种处分泌制度**对种类**原料 **"在这种企业的工程的企业,在各个企业** Water of the Park 1000年100日 1000日 10 WEST OF THE STATE

विनिष्ठलाथि ॥ बीर्वेग्ड्यामा ह गवस्याम् १८ व्यानार्थभक्तकः।। भुमार्यक्रयानाष्ट्रंभमाईक्रमेठ्य।। बीक्रियंपया॥ सडमें इयो अज्ञवा वायथण्चिडा इंश्यक्षणिभंभिक्क भन भायम्ठी भिडभ । हार्य्युवण्या दुला भ्रष्टिंश्चान्रम्भलभ्रिक्षभवश्व देश र्जानिक्रिक्मिठ्यायिम्बर्धार्वित्र हैंग्वें उचाया। अवक्राभिभक्ता वें इन्ला नाभानिइइडः॥ संदर्भाभकत्तेन्य। ले रामानियं कि उभी मिठन्यन क्राउडे भक्र भाडे भुव दूसभी। या साइ निषापी में बी इनिहे रणन नीस्थ डगाउँ नभानिवद्याभिस्र अगनिकगाउँ।। विन निड्निकें देन गड़े भारकेंड्र में। महिंग मर्ठीउम्मभग्गे सम्पेन्य भक्रमारं अवैषद्यः भम्रः भिरिद्धि

20-Ho

भेडे । विनण्ड क्रेंड भरें उपमीय चि नावित्रभा । न ग्राम् गर्वन्यं मेर्यानम भक्षक्म । मेरिमरंभयाने भिक्र कित्र में बेडिया।। मध्यी किक् भावी भर्मा भक्षनण्य रेशा श्रीवृग्व वैश नग्रिक्षः। रिष्कुन्त्रकुक्षत्रः। स्रीम्ब्रेग् थिली छुलाभाषीय वडणही वीरंग सीम किः किनिक्मा भी क्रिक्न भाषीभक्र न्मिं कि विचिष्णः ॥ इन्नेज्यु ॥॥ मध्यम्भ ॥श्राल्यचंडिशा। अलं मी इलायनभंशस्त्रा॥ श्रीगलमण्यनभः॥ छिल्लि इन्लिभाषी लेशे से एड्डिंग्लिय म राया । जिन्द्रभक्तनीना मुद्रत्व भुममीस् डिः। भ्ययम् भ्ययक्तरीमभा मर्भियद्वरी ।भनम्भेदिनीभङ्गंभाया। बालावलहरणाहणार्भाहणायभाह

मण्डवथाक्षेत्री॥विक्रिक्यानक्ष्याम् स्रः अपिनी अर्धामुनिनी मुलक्षुपा चुलियागार्याभर्नी समग्द्रिणननी भी इनीडलामगीकामिकाभूमिकाभपु भनांडः श्यनकलमायनी। श्रीऽः श्ले मन्द्रनाचनभासन्डिग्रिडः अउत्सुडि। विसन्ताम्मिश्वरही अपन्यक्र भाषम् भचभएड्युलिकभण्ड्यमळ्ड्यर्गालकप्रा यग्मा अटा स डिस्डिंगडिस्डि था नचमण नयनेश्मत्यगूर्विधिया नभ्या विनीवी ग्लानीवी भूकरी । बीर अवन्त लीवाइप्रग्रह्मकग्वडः।।वानीछल गावाक्त्र वामां मागडल अया। वीगमीय कामाज्यसम्बल्द्यम्चेर्गामल्डी साध्मर्भा मिर्मामधा चक् । मिर्ग विश्वासमुकानुग्न मिनिकाननगाम

इक्ल

भाग्यापाणीगृष्ट दिनिभिष्णगृहिया। रागडिकिड्रगर्मीभास्तीभुग्रभानिनी॥ भनभड़गढ़ मेड भ्रम्लाच्यापारिला भाडाभडेब्रामाब्रीभवाभिविधिक उ । भेरक्षकार्भअभाग्डभाग्डरापि नी भेद्रअधियमुङ प्रची प्रदेशनीती। एवडाभणक्षणभाष्ठीभचरगभाभा भज्ञाक्ष्म स्ट्राम्ड म्यानिक स्ट्राम्य मारामारमा द्वामा साम् निकानना न अप्रतिक कर्णास्मित्र स्मित्र प्रणि ली राष्ट्र विश्व किली रानग्वायोवे विन विग्रे कार्काकाकाकाकाका जलकाभनी। जेजकाभागिराज जिक्मा क्रिका मानिक स्थानिक क्षुक्वानानाभाषाभाषाभाषा अक्र अन्य वज्ञव द्वार जनगा जल

ल्क्थ्राक्रवरीन्डक्कवरी भन्ते स्रीनका वन्सर्नगर्भरीनगरिकः॥नगक्राः इः इशिकाण्डायानिम एकगव लागङ्ग्रीलहुन्। मुक्तुगामित री राषणधर्त्रमापणनश्चिमापण अतिरिशीतम् धार्मा कार्यास्थिः। रागउरंग सम्स्थी राष्ट्रवाष्ट्र लि उग एखनमियां भरामिक की भरूम भिउ ॥भचभग्डाभ्रमणलकः विकाष्टि डिं लेया दिक । जिड़ाल ड्रांडिल इंड्रंब क्षिणायक ली अया। जिल्ला कि अयुक्ती इक्ला इक्ला येनी। इंड अविश्वानीविभिवासनर्गिक माध्रामक्ष्याममाक्ष्यामापाः। अनिवानिया मामान्या मिक्षण्यां में कड़ी मणनीय भेने दि

म्निग्गयाण्यिकाड्यान्याण्याभ भाषी क्लाया मुशपकारिता क्रिक्टिक माना महत्रीम्बिधली वार्या हराश्रीहरभाषीनीपक्रथिए गालीप परीमलेलाकील्य जारियहरी॥ अम्म अल्याह्म अभाग्य अर्थे दिका। गएने असिकाकारकारकारि माया अप्रमिष्ट उर्ग माना भारता व भिक्षिणनान्यूयं अरानावण्ड न्धिराङ्गान् भड्ड अभग्डाम्नभा ः इतिमेस्री॥ विद्यार्थिय प्रमाम् मारिभा भगनिनी । रिनेर्फिए ग्जीन्यद्वर्भाज्ञम् स्री।इभिका र्भिय निम्कल्यमुकल्या इन्ध्रामाचुक्षीमाष्ट्रमानाम्बङ् म ॥ ठङ्काला अठङ्गा ठङ्का ३८ किनी अभग्रेडिक्क जाकि भिनी। ज िलानक । ज मराज्यक्रिश्म एक्सक्ख्यी मित्रियक निक्क लिक्ग्ल्डिय्थ्रिका क्रीक्गीन्य िचल्लीकण्णभानिम्यानी।।निम्भागः। निक्रमेधुरम्पायेनिनिर अया। निवि कगानगृज्ञासनित्वान्यधिक्रा न्थमङ्कि। जिस्सिम्सिम् क्राभाष्ट्रकारुविनि अभूतिभाष्ट्रभ नम्का महस्य महस्य भागा ड्सिमी श्रिपारित्र शिक्ता कि डिविन्छिए।। लिडिम्लनम्स्टिल की गुन्त्या विः। ग्राहित्या हिमार्थः। रामिकिर्यक्रिकारिका मिम्स्यरम् इट्सम्मर्गियनमञ्जूण मञ्जूनचित्र म अव्यक्तिक स्वरंगा उन्ने क्रिक्त

नेरामज्ञालमाज्ञालभीविष्ण वारिकाक लिक भराभमग्मग्रिका विकासिकीया किमीमा राजीय मंद्रमारी मिरिशीए न व्यापामित्रक्षित्रक्षित्रकार्तिका गर्न ने झारे गरका गरा दिया भी रागीरियारका मकारियास्या। थीनभनीयरमानी सम्बद्धारमितनी।। थ माथस्य गर्वहा पेत्र भेर्त पर्भणाभा लडीभमुगलाधा भारूराभानिनी उदा व अन्निध्यावस् मिक्रियावस्थान किक्वाश्रम्बयअप्य प्रवीभ्यः। र्राश्माभना भिक्र भिक्रलकी भेग्धरी। भई से में भड़े भड़े भग्ना डिम्मेनवर्धि काभणक्षेत्रमसद्वीभद्वरीभद्रला स्या भनमा अनमा अवज्ञाभातिक कर्णा । भिया विविध्योग्भाषाग्याभजकेमी मभक्रमा भ

जिम्हलम् अति हु जि अल्ला उन्ध्यन्न भार्य अने जनमी दिली। थाईकिकी भड़ाभाग्येड संडाहगा हग िख् डर्गिमापं कलाकेमवर्श्वरी कि न्स्य व ए अपन्यप्रभाग्य देखा न स्निइस्निइड्अम्मण्यश्मठा॥ सन्दर्भार्थिक के मार्थिक किया किंद्री किंद्र क गिकिका निर्धि भेषिक मित्राजीस इंडिडियानी ग्रीक श्रीमान गर्डे कल्भाग्यलक् भिनी अस्त्रीभाष्ठापुर भाषामण्यक्र श्रीभनित्रभाभानिनी भी नक्रांगिभन्नभी उप्पर्भी इटि:।भय भा उर्गयुक्त अ उर्भेर दिखा उनः। उनी। उन्ध्या अला से विद्यागा रेमाना मान्या है।

क्यांश्रीसार्भाविज्ञामिष्ठक्रामात्री कामला मंडी मुली मन्द्र करील्डी श्रीतिष्णी मान्स् सा सामारे सामारिक निर्मालका चनगारिः ॥ अङ्भेड्या परिस्माम् स्ट्रिम्स सणाजिनी। सम्झामीकाली अमारिक अध्यवम्यी। धरीम् एण्डालाइका ड्यापादगढिनी में उभेडी भड़भ श्रीवेमभाष्ट्रभग्धमा भङ्गाडेनुषी ०भावीव्यान्सम्बद्धाः ॥ व्यक्तिक्रिय भीइविद्यार्गित्रभित्रभाविशानित भग्स पग्रुज्ञाधास क्षेत्र अविनी अ भणना कृताक्वाष्ट्राभयनगर्भाष्ट्र स्थानम्भमान्यम् भएनिन्निमन्। मारिन्द्रभाष्ट्रमान्यान

LON L

भिन्न प्रकार में मान महत्त्वरा न न विक्रुभरीव्युवर्गिमेंचर्गिग्रा ग प्रकृतिग्रहाउँ द्वा अन्तिनी। जलायाज्ञ उपामभेर्गार्मनिका गर्ड गार्थभन्य भीयभन्न यहा। के अला मा अधिक विक्र मिक विक्र में प्राप्त कि मामिक् भिष्कि अस्ति । यवमा जुण निनी निविक्त नाका जका नहां भाभा उपा भय हि सउग्रिक किया सिर्मिश्त हिर्मिक हमस्य है। क्रिक्नियुच गारिष्ट्रांगेकलानमी निर्वाद्या का में इस हो मक इ हमा विक्रांशभान अक्रामार्थिं। इडिन्न अस्। उन्निडिंग्येसी भामा विधाना धाने पारिली। भर्षे कार

भउवाने सकारी विशिष्ति अक्ष यडीमिडिडी उपराली भारती विभागी ॥ सरस्य के के के के की हैं जिस के कि भवन्षियलाकः कुर्वाद्वय सारियनी विमनावाभवी विकाभना प्रसक्तिनी शिक्तिनाजिष्ट प्रमा मीम्भाजाना निया भक्ता किनी अ कालवालयक्सीभक्सिनी । उत्र क्सीविमान्नामी आए ५६७१भाउँ इरि थे अलाभा उक्कारा प्रमाणका ये गा क्करीक किनी निक्ष करण के क एक छिः।। विद्ना विद्वारी मुंडी मस्याप्त महामाजनामीप थार्डभुग्नुग्युं।क्रिक्ट्रिविस भगगमकरणेश्वरणाश्वरमा अपह

857

इत्रामयुन् मर्भामप्रामिध्या है विश्वित्र किमलनी माजा मारिक्षारि ली।मानाम्माम्भाष्ट्रभाष्ट भागागाभाष्ट्रभाष्ट्रमाथ्याम्भाष्ट्रित नियन । कि विश्विभक्ष में अपना विणि स्री।कालक्ष्वा भाषणा स्रा अभिनीयभिनी सम्मिका अच्छि भवम् मगीभनभाशिक्डक्शामनभन स्क्रमाद्वीस्थितिक एक्स्मितिक किल्पीन्य हैं का जिस में में में हगभग्रामिक्षण निक्षण्या निकार र ।। ज्ञानियां युविकिकः निविकिक र्धिका । हिर्देश के कि स्तिनी र लासी था छी। क्रा की सामा सामा सामा म्बायन्द्वरी । अन्ते प्रति अधिव ग्रेटिन । विद्यान भाइवक्षी॥डिनार्ड्साक्ष्माक्ष्मा

15

क्रभट्टरमण। मिइलाया वश्यडी भन्र ग्इनिस्वरगाम्बङ्ध्य अत्माभाभुश थरभार्किः॥थरमिद्रिभुषुःभण्लान्नण यक्त्रेपवीडिनीसमण्नक लिक् सम्प्र लयाद्वाधलीपनी अवसा अधिनी असी भी ने स्वारित्र है भिन्ने देश हैं ने से मक्षिलंक लन सिनी।क इलीक्न र्भागकालभण्डाभिलास्मी। सचाला क्र मा इभवम्देशक थिनी जल एभटले क्रमासङ्गाका स्वर्गमनी सञ्चरा सङ् भरी करिक्क गुर्किस्यी किरिक्र इभर्यी। ग्रिम्पाद्ध मा डिस्मिमी। डिस्म हिल्क अर्थ इनमी इयापक गालीए प्रथम अध्यानि इवनेखरी। इरीयाउमसरे ग्रहीम्हनीह्यानका।कानारिगक र दिम् विद्युमियण्लय । मियभङ्गित

150 L

अप्रमानिक विवास्त । नेत्री भीता गुनिस्तान्कान्त्राधिली,यप्रकेमीका अरुथन्मग्रुद्धिक वी, विभ्रक्षापलक। ण्डाक्षाक्त्राम्यक्षाम्। स्वास्त्राम् व्हर्वाभणवेगाभूगवर्गा मिरणमी। विसरलेका अर्थनिला विना भनी। सभ इक्ष्मभाग्रमान् क्रिक्टान्नी, विनः ॥रित नेस्रगिभ्रज्ञगला गंभी गंभाडिआरएड पु भूग्रेडग्राष्ट्रग्रंथक्ष्ण्याधिग्रक्ष जलभाषाका किला भला में क्रिक्षिक्षक्ष्णभाग्रामा लाभागतान्त्रमञ्जूनमञ्जूनमञ्जूनमञ्जून र्ग जनक्षात्र भवानकारणाट क्षतिक विक्रिये ग्रिया सम्बद्धा विक्राशनि रान्निसानुकर्मम्सा िर्वस्थित स्वान्या कार्या अउले हाम, राष्ट्र यन रायविन भक्षानामभेषा व्विञ्चला भाषी माउन ॥ १०० ॥ रल्डम्यम ॥

प्रिनुम्भे भक्षे इस्ना भाष्ट्रि मिने कि भा माइचन्रमंनिरंगील्एयभकासिउ भा भेडीक्की इभेभन इडि थेडिकन्थ प्रमी शुरुमभणनीयमभच सभग्य हुन भी भक्तप्त अयोधिक भये विक्र अपिथा मुद्रुपुरिलन्ध्र भावभे के विद्याप्तरभा यः ये द्वार्यम्पिम् लिडिम्ब्यमि व्याचित्रकारिसक्वर्रियमः कि या इंग्रभड्ड के यूकल्याम्य वासा है। वस्विम्ह्यान्त्रभत्त्राम् इत्त्मित्रः ध्र ज्ञास्तर्भ में इन्वाभाष्ट्राः अस्तर्भ मन्द्र कलम में दिश्मा याः थर्ड पे जिल्लामितिक्रीनमिश्चरिपादिक्व ज मुजग्रभभक्ष उच्च मुख्य मुख्य भूके किसम निभाषाक के मे विश्वां भाषक इम्हा कुमाण्यामा हाला भ्रष्टाः भेडे ज् र्ग भष्टक्रिश्चलग्द्रम्मसन्ने अविणन

罗•

विड्रानाभंभेतिन्यक्रथं वन्यभक्ष क्माफिब्रम्क प्रोठ्डे विग्रम् वनश यभ ।मनिवण्डारेण प्रष्टरणभेज भाम क्ष्रक्भ । स्डुग्ना वन लिंड स्क्रम् सन्तिक्येश विनानवेष्ट्रभएलन्य अण्यक्रम् अज्ञलाचण्यम् योच्य गलियिपिनाः। थेङ्ग पकार्यमले हेस्तान ४३ भभ । सानिया । भारिया राष्ट्र प्रमुनि दियाक पेड्र अभेदन निध्वाम्भक्षक्म । उज्जितन्त्रेम क्वीनिकलियनिडमः। भउन्यउमोगुः क्रिभणकें प्रज्ञनेलाहें ।। यहु चं का कव क्रियाका अभावना पेशियमा अभावन मस्त्रण इत्तेनण्यभावभुक् भागलेन वणवण्कियाणयरुडके दिया वड अल्लिठउभर्छा विक्रिणिभोन प्रम मीर्गणणाण्डाहें रे किस्ति के किस्ति के किस

निस्टिम्इसद्धंभन्द्रथाउँभाषीन क्रभायगड्यथिविद्यं म्राच्या प्रव भाषाग्रह्मेथे थे जा भारताप उ विसर्भगन्ति भगन्ति विसरिः॥ येक्टन्ड पिट्सई भिष्ठणभादिक उभेश इधेर रिसए प्रियण्या भारत अकर्म।। ४.इ.६ मेकवण्यं अधिमेन्ना भया पुरोष म्थ्रकामभ्याउड् भवज्ञ इभवजिषायंस जायन्जलीनायज्ञधरंयकुगद्भने प्रत ठिडि चिंदीनायूमीक्राफीनायथाचिडि। म्इक्षिक्षिक्षक पार्नाक श्रामा सह रहाचयुक्त भागक व्यभक मेंने भामग्राच्यसमीलाच्यम्ड्राभेज्ञभवानुचा ड ॥ ॥ दिखीमिर्यामनिड्येप्टन भाषां के मिक्ता भाषीनाम भारत के भाषा 21 47451

200 P

